मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व और योगदान

राजेश कुमारी[1*], गोविन्द कुमार बागड़ी[2], सुनिता चौधरी[3], राहुल कुमार शर्मा[1]

[1]डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, इंडिया–202002

[2]डिपार्टमेंट ऑफ सॉइल साइंस एंड एग्रीकल्चरल केमिस्ट्री, आईएएस, बी एच यू, वाराणसी–221005, इंडिया

[3]डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोनोमी, इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (आईएएस), बी एच यू, वाराणसी–221005, इंडिया

Email: kumarirajesh001@gmail.com

परिचय

कृषि से अभिप्राय उन सभी क्रियाओ से है जिनका सम्बन्ध फसलों के उत्पादन के लिए भूमि को जोतने से है। यह वह प्रक्रिया है जिसमे फसलों के उत्पादन के अतिरिक्त पशुपालन, पौधों की खेती तथा अन्य पदार्थों का उत्पादन करती है। यह अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का वह प्रमुख घटक है, जो प्राकृतिक संसाधनों द्वारा उत्पादन पर बल देता है। कृषि उन वस्तुओ को उपलबध कराती है जो मानवीय जीवन की उत्तरजीविता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भारत में 45: पर कृषि की जाती है। नेशनल ब्यूरो ऑफ सॉयल सर्वे के अनुसार भारत में 20 कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्र व 60 कृषि–पारिस्थितिकी उपक्षेत्र है।

कृषि पारिस्थितिक क्षेत्र व उपक्षेत्र का विभाजन जैव, मिटटी, जलवायु, प्रकार व प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर किया जाता है।

फसल ऋतु

खरीफ	बुवाई	कटाई	प्रमुख फसलें
	जून– जुलाई	अक्टूबर–नवंबर	चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, मूंगफली, सूरजमुखी, मूंग, उर्द, सोयाबीन, कपास, व तम्बाकू अदि
रबी	अक्टूबर – नवंबर	मार्च–अप्रैल	गेहूं, जौ, चना, मटर, सरसों, मसूर, गन्ना, व आलू अदि।
जायद	मार्च–अप्रैल	जून– जुलाई	तरबूजा, खरबूजा, ककड़ी, खीरा, भिंडी, आदि।

कृषि का महत्व

1. जी डी पी में योगदान– भारत की जी डी पी का 164 भाग प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर है। जिसमे कृषि के अलावा पशु पालन, मुर्गी पालन आदि आते हैं। भारत की आजादी की पंचवर्षीय योजना के तहत 1950–1951 मे कृषि का योगदान जी डी पी मे 51% था, अब पूरे जी डी पी का 18 % कृषि से प्राप्त हो रहा हैं। शेष द्वितीय और तृतीय क्षेत्र से प्राप्त हो रहा है।

2. मजदूरी वस्तुओं की पूर्ति– जो वस्तुऐं किसी मनुष्य के जीवन यापन के लिए आवश्यक हो। कृषि से 104 करोड़ लोगों को भोजन मिलता है और 38 करोड़ पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होता है।

3. रोजगार– कृषि भारत के अंदर बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण स्रोत है। पूरी जनसंख्या का 64% कृषि में लगी हुई है। कृषि भारत के लोगों के लिए जीवन निर्वाह का स्रोत बन गया हैं।

4. औद्योगिक कच्चा माल– औद्योगिक द्रितीय क्षेत्र के अंतर्गत आता हैं जो अपने कच्चे माल के लिए प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर है। कपड़े, तेल, तथा चीनी उद्योग अपने कच्चे माल जैसे कपास, तेलबीज, और गन्ना कृषि पर निर्भर है। द्रितीय क्षेत्र का विकास पूरी तरह प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर है।

5. घरेलु व्यापर में योगदान– मक्का, गेहूँ, चना, आदि की प्राप्ति कृषि से होती है। मनुष्य इन चीजो को खरीदने के लिए खर्चा करते हैं। इससे प्राप्त पैसा घरेलु व्यापर में जाता है।

6. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार– भारत चाय, जूट, तम्बाकू, काफी, एवं काजू, मसाले आदि वस्तुएं दूसरे देशों में निर्यात करता है। जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में योगदान मिलता है।

7. राष्ट्र का धन– इसका बहुत बड़ा भाग कृषि से सम्बन्धित है।

8. आजीविका का साधन– हमारा देश कृषि प्रधान देश है क्योंकि कृषि देश में जीविका का साधन है।

9. राजस्व में योगदान 10. व्यापार में वृद्धि 11. राष्ट्रीय आय में योगदान

नई तकनीकों के आविष्कार द्वारा, उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग, सिंचाई की प्रणालियों के विस्तार इत्यादि के अधिक प्रयोग के माध्यम से खाद्यान्न व रेशों का उत्पादन कई गुना बढ़ गया है। यद्यपि इन नई तकनीकों का बहुत लाभ हुआ है, परन्तु इन्हीं के कुछ हानिकारक परिणाम भी हुए हैं– जैसे भूमि की ऊपरी परत के स्तर में गिरावट व भूमिगत जल के प्रदूषण के कारण कुछ गंभीर सामाजिक व पर्यावरण–सम्बन्धी समस्याएँ पैदा हो गई हैं। इसके अतिरिक्त नई मशीनों व उपकरणों के प्रयोग से खेतों पर काम करने वाले मजदूरों में बेरोजगारी की समस्या बढ़ी है। इसके अलावा मानवीय आवश्यकताएँ और पर्यावरण का अत्यधिक दोहन आदि। पिछले दो दशकों में कृषि विशेषज्ञों की भूमिका की आलोचना हुई है, जिनके द्वारा ये सामाजिक समस्याएँ बढ़ी हैं। आधुनिक कृषि की विधियों का नकारात्मक परिणाम देखकर, अब 'दीर्घोपयोगी कृषि' की मांग उठ रही है। दीर्घोपयोगी कृषि–प्रणाली (ेनेजंपदंइसम हतव लेजमउ) पर्यावरण को संरक्षित करने की प्रणालियों के साथ–साथ कृषकों, मजदूरों, उपभोक्ताओं आदि, नीति निर्णायकों व अन्य लोगों के लिये सम्पूर्ण खाद्यतंत्र के लिये नवीनीकृत व आर्थिक रूप से अच्छे स्तर के सुअवसरों को प्रदान करने का प्रयास कर रही है।

भारत की अर्थव्यवस्था

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ 70% लोग कृषि व कृषि से सम्बंधित कार्यों में लगे हुए है। कृषि ही देश की अधिकांश जनसंख्या को आजीविका प्रदान करती है राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का एक बड़ा अंश है हमारे देश के अधिकतर उद्योग धंधे कृषि पर आधारित है। इस प्रकार भरतीय अर्थव्यवस्था का ताना बाना कृषि पर ही बुना हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व व योगदान को निम्नवत स्पष्ट किया गया है। राष्ट्रीय आय का प्रमुख आधार है। भारत के 58% से अधिक लोग कृषि और कृषि से सम्बन्ध कार्यों में लगे हुए है। स्पष्ट है की कृषि राष्ट्रीय आय का प्रमुख आधार है। कुछ वर्ष पूर्व जब कृषि क्षेत्र में 0.2% वृद्धि थी तब सकल घरेलू उत्पाद भी घटकर 4% रह गयी थी।

विदेशी व्यापार में महत्व व विदेशी मुद्रा की प्राप्ति–कृषि निर्यात देश के कुल वार्षिक निर्यात का 13–18 % भाग है। वर्ष 2011, 12 में यह 27.68% था इस वर्ष देश से 3.8 करोड़ से अधिक मूल्य के कृषि उत्पादों का निर्यात किया गया है। जिनमे 23% हिस्सा समुद्री उत्पादों का था।

सुझाव

1. पर्यावरण की गुणवत्ता को उत्तम बनाने की आवश्यकता
2. मिश्रित फसल उगाना या दि्ग– परिवर्तित कृषि

पॉलीवैराइटल' प्रकार की कृषि. जिसमें एक ही प्रकार के पौधों की कई विभिन्न किस्मों की फसलें उगाई जाती हैं।

'इन्टरक्रॉपिंग' विधि. जिसमें एक प्लॉट पर एक ही समय पर दो या दो से अधिक किस्म के पौधे उगाए जाते हैं ।

बहुशस्यन– इस प्रणाली में विभिन्न समय कालों में परिपक्व होने वाले विभिन्न प्रकार के पौधों की एक साथ बुआई की जाती है।

फसलों का चक्रीकरण

मृदा प्रबंधन– एक स्वस्थ मृदा, दीर्घोपयोगी कृषि का एक मुख्य घटक है अर्थात जब किसी साफ–सुथरी भूमि (मृदा) को पर्याप्त मात्रा में पानी व पोषक तत्व पाये जाते हैं, तब उसके परिणाम स्वरूप ऐसे पौधे उत्पन्न होते हैं, जो स्वयं को काफी हद तक पीड़कों व बीमारियों से बचा सकते हैं। अतः दीर्घ अवधि की उत्पादकता व स्थिरता को पाने के लिये, भूमि का संरक्षण एवं पोषित करना आवश्यक है। भूमि के संरक्षण की कुछ निम्नलिखित विधियाँ हैं जिनमें आवरण फसलों (कवर क्रॉप्स) का प्रयोग, खाद का प्रयोग, जुताई करने में कमी करना, मृदा में पाए गए जलवाष्प का संरक्षण, मृत मल्च (क्मंक डनसबीमे) इन सब विधियों द्वारा भूमि की जल धारण करने की क्षमता में वृद्धि होती है।